International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No. 5 May – June 2025

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी नायक: मास्टर अमीर चंद व लाला हनुवन्त सहाय

डॉ. नुज़हत फ़ातिमा

असिस्टेंट प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास विभाग

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज, (संघटक इलाहाबाद विश्वविद्यालय) प्रयागराज - 211003 यू. पी.

Corresponding Author - डॉ. नुज़हत फ़ातिमा

DOI - 10.5281/zenodo.16432247

शोध सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र में दो महान राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों के बलिदान का वर्णन किया है। जिन्होंने राष्ट्रप्रेम से प्रेरित होकर क्रान्तिकारी क़दम उठाए। अतः उन पर घोर अत्याचार किए गए परन्तु उन दोनों ने अपने धैर्य व साहस का परिचय देते हुए ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी।

इस शोध पत्र में उनके समकालीनों द्वारा लिखित पुस्तकों से सूचनाएँ जुटाई गई हैं, जिनको ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्धित कर दिया था। यह पुस्तकें प्राथमिक स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय स्रोतों से भी सूचनाएँ एकत्रित की गई हैं।

मास्टर अमीर चंद और लाला हनुवन्त सहाय दोनों ही क्रान्तिकारी नायकों ने भारत देश में स्वदेशी के प्रचार व प्रसार का कार्य किया। इतना ही नहीं भारतीय जनता के सामाजिक कल्याण हेतु अनके कार्यों ने जनता के मनोबल को भी ऊँचा उठाया। उन्होनें समाचार पत्र प्रकाशित कर के अपने क्रान्तिकारी विचारों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के घोर विरोध के लिए जनता को प्रेरित किया। इन क्रान्तिकारी नायकों ने जेल की यातनाएँ झेली। नज़रबंद किए गए तथा फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

कुंजी शब्द: स्वदेशी का प्रचार, समाचार पत्रों का प्रकाशन, विद्यालयों की स्थापना, युवक तथा युवितयों में क्रान्तिकारी साहित्य का वितरण।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन भी एक महत्वपूर्ण आन्दोलन था। क्रान्तिकारियों का दृष्टीकोण अन्य स्वतन्त्रता सेनानियों से भिन्न था। उनका विश्वास था कि केवल शान्तिमय ढ़गं से आन्दोलन करने से ही देश स्वतन्त्रत नहीं हो सकता। ब्रिटिश सरकार की अत्याचारपूर्ण नीति की प्रतिक्रिया स्वरूप इन राष्ट्र प्रेमियों ने हिंसा का मार्ग अपनाया। इन क्रान्तिकारियों ने देश के अलग अलग भागों में अपनी गुप्त संस्थाएँ बनाई। इतना ही नहीं यह विदेशों में भी क्रान्तिकारी संस्थाओं से जुड़े थे। इन क्रान्तिकारियों अस्त्र शस्त्र बनाने का शिक्षण लिया। इनका मुख्य ध्येय ब्रिटिश अधिकारियों को अपना निशाना बनाना था। इन राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों ने केवल हिंसा का मार्ग ही नहीं अपनाया अपितु इनमें असंख्य क्रान्तिकारी शिक्षित विद्वान थे, जिन्होंने रचनात्मक कार्य भी किए। उदाहरणार्थ इन राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों ने स्वदेशी के प्रसार व प्रचार हेतु विद्यालय खोले, रात्रि कक्षाएँ चलाईं, समाचार पत्र व पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए प्रेस खोले, देशवासियों के भारत निर्मित वस्तुओं को उपलब्ध करने के लिए स्वदेशी स्टोर खोले तथा स्वदेशी वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई। समाज में व्यापत

कुरीतियों को समाप्त करने का कार्य भी किया। देश प्रेम की भावना से परिपूर्ण इन राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों को अँग्रेज़ी सरकार के प्रकोप को सहन करना पड़ा। इन क्रान्तिकारियों में मास्टर अमीर चंद व लाला हनुवन्त सहाय जी ने देश को स्वतन्त्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन दोनों ने अनेक प्रकार की यातनाएँ झेली परन्तु देश की ख़ातिर हँसते हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी।

मास्टर अमीरचंद:

आपके पिता का नाम हुकुमचंद जी था। इनके पिता रियासत हैदराबाद दक्कन के विधान परिषद के सचिव थे। वह दिल्ली के अग्रवाल प्रेस दरीबा कलाँ में निवास करते थे। हुक्म चंद जी इतने विद्वान थे कि जब इंग्लैंड गए तो रानी विक्टोरिया ने आपको 'हिन्दुस्तानी विधिवेत्ता' की उपाधि से सुशोभित किया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें बैरिस्टरों को पढ़ाई जाती थीं। वह हैदराबाद रियासत में लॉ कॉलेज में प्रवक्ता थे।[1]

ऐसे विद्वान पुरुष के सुपुत्र अमीर चंद बाल्यवस्था से ही कोमल हृदय एवं विनम्रता की मूर्ति थे। उनका जन्म 1869 में दिल्ली में हुआ था।[2]

वह सदैव दरिद्रों की सहायता करने हेतु तत्पर रहते थे। अमीर चंद जी ने आरम्भिक शिक्षा मिशन कॉलेज से प्राप्त की और कॉलेज शिक्षा पूरी करने के पश्चात् अमीर चंद जी मिशन कॉलेज में मास्टर हो गए। वह भारतीय विद्यार्थियों के साथ असमानता का व्यवहार और अत्याचार को सहन नहीं कर पाते थे। वह निर्धन विद्यार्थियों की पुस्तक आदि देकर सहायता किया करते थे। अमीर चंद जी ने अपने घर का नाम 'प्रेम धाम' रखा था, जहाँ निर्धन व निःसहाय लोगों की सहायता व उत्साहवर्धन होता था। कुछ समय के पश्चात् वह संस्कृत स्कूल के हेड मास्टर हो गए, तत्पश्चात् राय केदरनाथ के स्कूल में बिना परिश्रमिक के अध्यापन कार्य किया। जब भारत में स्वदेशी आन्दोलन का आरम्भ हुआ तो दिल्ली की जनता इस आन्दोलन से अनभिज्ञ थे। ऐसे समय में अमीर चंद जी ने उनको 'स्वदेशी' का अर्थ एवं समय की आवश्यकतानुसार 'स्वदेशी' आन्दोलन को आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित किया। वह देहली में चलने वाली ट्रेमू को भी भारतियों के लिए हानिकारक समझते थे। उनके विचार में विदेशी मशीनों के प्रयोग से भारतिय परिश्रम से दूर और पंगु हो जाएंगे। जनता में अमीर चंद जी का इतना प्रभाव था कि जनता ने ट्रेमू को त्याग दिया। स्वदेशी के प्रति उनके मन में इतना प्रेम था कि वह दिल्ली वासियों को स्वदेशी माल को प्राप्त करने के लिए जो कठिनाइयाँ झेलनी पड़ रही थी उसको दृष्टि में रख कर उनको सुविधा हेतु एक 'स्वदेशी स्टोर' खोल दिया था, जिसमें भारत से निर्मित वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती थी। वह सदैव स्वदेशी के प्रति जनता में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए उत्साहजनक भाषण दिया करते थे। अपने एक भाषण में उन्होंने कहा था :

''हिन्दुस्तान की प्रगति की निर्भरता देशी कपड़ा प्रयोग करने और राष्ट्रीय नेताओं की तस्वीरों व उनकी जीवनी शैली के अध्यापन पर आधारित है।''[3]

मास्टर जी ने दिल्ली के किनारी बाज़ार में एक राष्ट्रीय पुस्तकालय खोला और दुकानदारों के पास जा कर वहाँ उपस्थित लोगों में पुस्तकों के अध्ययन की रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने स्वदेशी प्रचार व प्रसार कार्य का आरम्भ उस समय किया जबकि देशी वस्त्र और राष्ट्र प्रेम करने वालो के पीछे सी. आई. डी. लगी होती थी और ऐसे राष्ट्र भक्तों पर घोर अत्याचार किया जाता था। मास्टर जी भी इस से नहीं बच सके। अंग्रेज़ी सरकार की ओर से स्वदेशी का प्रचार करने वाले लेखों पर पाबन्दी लग गई, परन्तु मास्टर जी ने साहस नहीं खोया और शीघ्र ही 'नेशनल प्रेस' के नाम से एक प्रेस स्थापित की, जिसका ध्येय राष्ट्र प्रेमियों के कारनामों से जनता को

अवगत कराना था। परन्तु 'नेशनल प्रेस' पर अंग्रेज़ी सरकार की अत्याचारी दृष्टि थी। भारतीय वहाँ अपने लेख प्रकाशित करते हुए डरते थे। अतः मास्टर जी 1908 ई. में 'देहली आकाश' के नाम से एक समाचार पत्र प्रकाशित करने लगे। अंग्रेज़ी सरकार ने इस समाचार पत्र पर कई मुकदमें किए, जिसकी ज़मानत पर बहुत धन खर्च हुआ। परन्तु मास्टर जी ने हिम्मत नहीं हारी और 'देहली आकाश' का प्रकाशन होता रहा। यह अपने आप में एक अद्भुत समाचार पत्र था, जिसमें किसी प्रकार के विज्ञापन नहीं होते थे और न ही जनता से किसी प्रकार की वित्तीय सहयता ली जाती थी। इस विषय में मास्टर जी का विचार था कि यदि जनता से धन की अपील की जायेगी तो लोग सोचेंगे यह एक ढ़ोंग है। यह हमारे काम को हानि पँहुचाएगा। मास्टर जी अपने साथियों को सदैव सही पाठ पढ़ाते थे कि धन बहुत सम्भल कर व्यय करना चाहिए। यदि जनता से चंदा लिया जाए तो उसे व्यर्थ न करें। जो लोग जनता के ख़ून पसीने की कमाई को द्वितीय एवं प्रथम वर्ग के टाँगों और रेलवे में ख़र्च करते है, वह जनता का ख़ून बहाते और अत्याचार करते हैं।[4]

मास्टर स्वयं अपना धन ख़र्च करते रहे। आपका कहना था कि देश प्रेमी वही होते है जो देश पर अपने आप को क़ुर्बान कर दें। निर्धनता का जीवन जीते हुए भी हर समय देश की उन्नति एवं विकास हेतु बाधाओं को लाँघकर मुसीबतों का स्वागत करते हुए देश पर न्योछावर हो जाइए।[5]

सन् 1909 ई. में लाला लाजपत राय ने 'देहली स्वदेशी' के नाम से भारत में निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई तब मास्टर स्वदेशी के प्रचार में लग गए और इस प्रदर्शनी के कोषाध्यक्ष का सम्पूर्ण कार्य पूरी ईमानदारी एवं परिश्रम से किया। जब लोगों ने लाला लाजपतराय के भाषणों पर टिकट लगाने का सुझाव दिया तो मास्टर जी ने इसका घोर विरोध किया तथा प्रदर्शनी से इसलिए हट गए कि उनका विचार था कि ऐसा करने से निर्धन लोग लाला जी की शिक्षाओं से लाभान्वित नहीं हो पायेंगे। यह निर्धनों के साथ एक प्रकार का अत्याचार है, जो मैं नहीं सहनकर सकता।[6] कोमल हृदयी मास्टर जी ने निर्धन विधवा महिलाओं की दरिद्रता को दृष्टि में रख कर विधवाओं की स्थिति पर एक अपील प्रकाशित की और 'विधवा विवाह सभा देहली' को अस्तित्व में लाए। सन् 1911 ई. में इस सभा हेतु 'विधवा विवाह सभा देहली' नामक एक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। भविष्य में उनका विचार 'देहली विधवा विवाह भवन' के निमार्ण करने का था, परन्तु उससे पहले ही उनको फाँसी पर ही चढ़ा दिया गया।[7]

सन् 1913 ई. में जब गोपाल कृष्ण गोखले ने दिल्ली आकर दक्षिण अफ़्रीक़ा में निवास करने वाले भारतीयों पर होने वाले अत्याचारों के विषय में बताया तब मास्टर जी ने जनता से अपील की कि भारत में भी अंग्रेज़ी सरकार से कहा जाए कि भारत में दक्षिण अफ़्रीक़ा के निवासियों के साथ इसी प्रकार से कठोर व्यवहार किया जाए जैसे कि वहाँ पर भारतीयों पर किया जा रहा है या अंग्रेज़ी सरकार को इस बात पर मजबूर करें कि भारतीयों पर से सभी पाबन्दियाँ हटा कर उन पर होने वाले अत्याचार को रोका जाए और जो भारतीय वहाँ की जेलों में क़ैद हैं उनको रिहा किया जाए तथा उन पर अत्याचार भी न किया जाए। अपितु हम सब उनके विरुद्ध सत्याग्रह करेंगे।[8]

सन् 1913 ई. में उन्होंने नवयुवकों से अपील की कि वह नाचने गाने वाले से दूर रहें और चरित्रवान बनें। जो लोग नाच गाने का कार्यक्रम कराते हैं उनसे भी दूर रहें। मास्टर जी ने अपने समाचार पत्र में इसके विरोध में लिखा। पातीराम के कूचे की धर्मशाला में भाषण करते हुए उन्होंने कहा था :

''भारतीयों ! तुमको बहुत कुछ काम करना है तुम्हारा रूपया बहुत क़ीमती है। तुमको इस रूपए से हिन्दुस्तान की उन्नति में बलिदान करना होगा। आप

इस प्रकार के व्यर्थ कामों में अपने रुपए बर्बाद न करें।''[9]

मास्टर जी के इस प्रभावशाली भाषण का दिल्ली वालों पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि केवल कुछ को छोड़ कर सभी ने इस बुरी आदत को त्याग दिया। उनकी ही शिक्षा का परिणाम था कि अधिकतर छात्राओं ने नाच न देखने की क़सम खा ली। उनके क्रान्तिकारी विचारों के कारण पुलिस ने आपकी कठोर निगरानी आरम्भ की। उनसे मिलने वालों को भी प्रताड़ित किया जाता था। वह पुलिस की कठोरता का धैर्यता के साथ उत्तर दिया करते थे। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था:

''पुलिस वाले भी हमारे भाई हैं। एक समय आएगा जब यह हमारी सहायता करेंगे और हिन्दुस्तान का अधिकार अपने जिस्म व जान पर महसूस करेंगे। अभी शिक्षा की कमी है इसलिए यह लोग हमारे साथ कठोरता करते हैं। परम ईश्वर तुम्हारी परीक्षा लेते हैं। तुम बहुत धैर्य एवं वीरता के साथ क़ानून परिधि के अन्तर्गत अपने ध्येय को प्राप्त करो। अपने देश व राष्ट्र की इज़्ज़त को अपनी इज़्ज़त और उसकी ज़िल्लत समझो। अत्यन्त साधारण जीवन व्यतीत करो। अपने देश में निर्मित वस्तुओं को विदेशी वस्तुओं से बढ़कर समझो। फ़ैशन के मतवाले बन कर देश की आमदनी को जो पहले ही नौ पाई प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है उसको अवैधानिक रूप से ख़र्च न करो, क्योंकि इस अल्प आमदनी में हिन्दुस्तान केवल चने चबा कर भी गुज़ारा नहीं कर सकता। यदि तुम इस आमदनी को अवैधानिक रूप से व्यय करोगे तो तुम्हारे कई भाई भूख का शिकार होंगे। व्यय करते समय देश की स्थिति को किसी भी प्रकार नज़रअंदाज़ मत करो और सोचो कि मेरे यह ख़र्च राष्ट्र पर कितनी निर्धनता का कारण बनेंगे।[10]

इसी बीच 23/दिसंबर 1912 ई0 को दिल्ली में वाइसराय लार्ड हार्डिंज़ पर बम फेंका गया था।[11]

पुलिस ने बम फेंकने वाले आरोपी को ढूंढ़ने की चेष्टा की। स्थान-स्थान पर छापा पड़ा लेकिन कुछ पता न चला। वाइसराय पर बम फेंकने के आरोप में अनेक व्यक्ति गिरफ़्तार कर लिये गये और उन पर दो वर्ष तक मुक़दमा चला। दिल्ली षड़यन्त केस के नाम से मशहूर है। इसमे दिनानाथ नामक एक व्यक्ति ने मोख़बिर की भूमिका निभाई थी। मास्टर जी अपने देश की सेवा में लीन थे कि 16/फ़रवरी सन् 1914 ई. के दिन दिल्ली नगर की गली गली में पुलिस के पड़ाव डाले गए और घरों में तलाशी ली गई। 19/फ़रवरी 1914 ई. को मास्टर जी गिरफ़्तार कर लिए गए। उन पर दिल्ली साज़िश का मुक़दमा चलाया गया/अन्त में मई 1915 ई0 में मास्टर अमीर चंद, बाल मुकुन्द तथा अवध बिहारी को दिल्ली में और बसन्त कुमार विस्वास को अम्बाला में फाँसी दी गई थी और चरनदास को अजीवन काला पानी का दण्ड दिया गया।[12]

फ़ाँसी के फन्दे पर झूलने से पहले उन्होंने अपने भारतीय भाइयों से कहा था:

''हिन्दुस्तानियो ! देश के लिए मरना और देश के लिए जीना है। देश के लिए बलिदान अत्यन्त आवश्यक है। तुम अपने देश और हिन्दुस्तानी भाइयों को हरगिज़ नहीं भूलना। मैं कहता हूँ कि मैं बेगुनाह हूँ। मेरे पास इतना है कि मैं अपने देश और राष्ट्र से प्रेम करता हूँ, जिसको मैंने सदैव अपने दिल में रखा है और भविष्य में भी रखूँगा।''[13]

लाला हनुवन्त सहाय:

यह देहली के प्रसिद्ध कायस्थ परिवार से थे। अमरोहा में इनका परिवार बख़्तावर सिंह के नाम से प्रसिद्ध है। इनके सातवीं अथवा आठवीं पीढ़ी देहली में आकर बस गई थी। लाला जी का जन्म 1883 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम मुंशी शिव साहय था जो उच्च कोटि के फ़ारसी विद्वान थे। उन्होंने देहली के

स्टीफ़न्स स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। आरम्भ से ही आप सत्य के मार्ग पर चलते थे। उन्होंने वेदान्त और हिन्दू दर्शन का अध्ययन किया था। सन् 1901 ई. में स्वामी विवेकानन्द जी के वक्तव्यों से उनमें राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हुई। लाला हरदयाल जी उनके सहपाठी थे और उनकी द्वारा लिखित पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। हनुवन्त सहाय जी राजनीति से सम्बधिन्त पुस्तकें भी पढ़ने लगे, जिससे उनमें राजनीति की समझ उत्पन्न हुई। 1905 ई. में जब बंगाल का विभाजन हुआ तब उनके हृदय में देशप्रेम की भावना उत्पन्न हुई। 1906 ई. में जब देहली में 'स्वदेशी आन्दोलन' ने ज़ोर पकड़ा तब उन्होंने लाला हरदयाल के इंग्लैण्ड जाने के बाद उनकी वापसी पर उनके साथ आन्दोलन में पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। लाला हरदयाल के इंग्लैंड से वापसी पर उनके आन्दोलन, उनके सुझाव का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा था। यह भारत माता सोसाइटी के सक्रिय सदस्य भी थे।[14]

वह 1907 ई. में सूफ़ी अम्बा प्रसाद जी के नेतृत्व में बनी अम्बा प्रसाद सोसाइटी के सदस्य थे।[15]

अतः 1908 ई. में आपने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार इस प्रकार किया कि यूरोप से माल मँगवाना बन्द कर दिया। इसी समय अरविन्द घोष के द्वारा प्रारम्भ किए गए समाचार पत्र 'वन्दे मात्रम' एवं 'कर्म योगी' से बहुत प्रभावित हो कर उनसे मिलने कलकत्ता गए।

देश प्रेम की भावना से परिपूर्ण हनुवन्त जी का अधिकतर समय देश सेवा में व्यतीत होता था। वह देश को अंग्रेज़ी साम्राज्य के शिकंजे से निकालने के लिए पूर्ण उत्साह के साथ स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रचार जनता में कर रहे थे। अपने ध्येय की पूर्ति हेतु उन्होंने मास्टर अमीर चंद के नेतृत्व में एक 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' और 'अध्ययन कक्ष' की स्थापना की। कई मोहल्लों में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की, जहाँ हिन्दू तथा मुस्लिम बच्चों को राष्ट्रीय शिक्षा दी जाती थी। परन्तु अंग्रेज़ी सरकार ने इन राष्ट्रीय विद्यालयों को बन्द कर दिया। फिर भी हनुमन्त जी ने साहस नहीं छोड़ा और अपने घर पर रात्रि कक्षाएँ चलाना आरम्भ कर दिया, जिसमें स्कूल के समय के बाद बालक आकर राजनीति की शिक्षा निःशुल्क प्राप्त करते थे।[16]

मास्टर अमीर चंद, मास्टर गणेशी लाल और मास्टर अवध बिहारी इत्यादि इस विद्यालय में शिक्षक थे और इसी समय सैयद हैदर रज़ा के सम्पादन में 'आफ़ताब अख़बार' निकलता था जिसमें ऐतिहासिक व राजनीतिक लेख एवं तत्कालीन व्यवस्था पर स्वतन्त्र टिप्पणियाँ की जाती थीं। यह समाचार पत्र हिन्दू तथा मुसलमान दो सम्प्रदायों में लोकप्रिय था। अतः अंग्रेज़ी सरकार द्वारा उस पर पाबन्दी लगा दी गई। तब भी समय पर उर्दू एवं अंग्रेज़ी में गुप्त पर्चे तथा बुलेटिन निकाले गए। जनता को राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु प्रेरित करने के लिए 'लिबर्टी' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया। विभिन्न स्रोतों द्वारा सम्पूर्ण देश में राजनीतिक वातावरण बनाने के प्रयास से अधिक संख्या में नवयुवक राष्ट्रीय आन्दोलन में सम्मिलित हुए। उस समय पंजाब में राजनीतिक वातावरण में तनाव बना हुआ था। उस तनाव को समाप्त करने हेतु लाला लाजपत राय, हनुमन्त जी को पंजाब भेजा जहाँ पहुँच कर सर्वप्रथम उन्होंने इस्लामिया कॉलेज लाहौर में छात्रों को राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु प्रेरित किया। जिसमें उन्हें अत्याधिक सफलता प्राप्त हुई और छात्र राष्ट्रीय साहित्य वितरित करने पर बहुत सहयोग कर रहे थे।

हनुमन्त जी ने देहली, यू.पी. एवं पंजाब के ग्रामीण क्षेत्रों में घूम घूम कर उन स्थानों के नव युवकों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने की चेष्टा की, जहाँ से नवयुवक अँग्रेज़ी सेना में भर्ती किए जाते थे।[17]

1912 ई. में लाला हरदयाल की इच्छा थी कि हनुवन्त जी अमेरिका में उनकी पार्टी के साथ काम करें। अतः मार्च/1913 ई. में आप अमेरिका जाने वाले थे, परन्तु सरकार ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। 1913 ई. में ही कालकत्ता में तलाशी के दौरान कुछ काग़ज़ात प्राप्त हो गए और महत्वपूर्ण सूचनाएँ सरकार के हाथ लग गयीं। इस कारण हनुवन्त जी के संगी जो सक्रिय क्रान्तिकारी थे मास्टर अमीर चंद, मास्टर अवध बिहारी तथा लगभग डेढ़ सौ व्यक्ति गिरफ़्तार कर के देहली लाए गए। 4/मार्च 1914 ई. में हत्या का आरोप लगा कर धारा 302 के अन्तर्गत गिरफ़्तार कर लिया गया। उनको पन्द्रह बीस दिन कोतवाली में रख कर पूछताछ की गई, प्रताड़ित भी किया गया। लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाले का नाम बताने पर सवा लाख के पुरस्कार की लालच भी दी गई, लेकिन हनुवन्त जी से कुछ जानकारी प्राप्त न हो सकी तो उनको जेल भेज दिया गया जहाँ उनको चौबीस घण्टों तक अन्धेरी कोठरी में रखा जाता था।[18]

हनुवन्त जी पर मुक़द्मा स्पेशल सेशन कोर्ट में किया गया और 8, 9 मास तक मुक़द्मा चलता रहा। लाला जी की ओर लाला शिवनारायण वकील, रऊफ़ अली बैरिस्टर और मिस्टर सेन पैरवी कर रहे थे। सेशन कोर्ट में मिस्टर सी0 आर0 दास को पैरवी हेतु बुलाया गया परन्तु वह सेशन जज के अपमानजनक व्यवहार को सहन न कर सके और वापस चले गए।[19]

सेशन जज ने बहस सुनने के पश्चात् अपने फ़ैसले में मास्टर अमीर चंद, मास्टर अवध बिहारी और मिस्टर बालमुकुन्द को फाँसी की सज़ा सुनाई और लाला हनुवन्त सहाय, लाला बलराज तथा बसन्त कुमार बिस्वास को काला पानी की सज़ा दी गई। इस फ़ैसले की चीफ़ कोर्ट लाहौर में अपील की गई। वह एक मास तक सुनवाई होने के बाद जो फ़ैसला दिया गया उसके अनुसार मास्टर अमीर चंद, मास्टर अवध बिहारी और मिस्टर बालमुकुन्द की फाँसी की सज़ा पहले ही भाँति रही। इन सब के साथ बसन्त कुमार बिस्वास को भी काला पानी की सज़ा के स्थान पर फाँसी की सज़ा सुनाई गई।[20]

लाला हनुवन्त सहाय और लाला बलराज को काले पानी की सज़ा को कम कर के सात वर्षों के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। लाला जी 1920 ई. में अपना दण्ड भोग कर कारावास से बाहर आए तो उन्होंने काँग्रेस में दाख़िल हो कर अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध प्रत्येक आन्दोलन में भाग लिया।[21]

लाला हनुवन्त साहय जी ने 1921 ई. में असहयोग आन्दोलन में चार मास और सन् 1930 ई. में साढ़े सात मास का कारावास दण्ड भोगा। सन् 1932 ई. में काँग्रेस के विशेष अधिवेशन के अवसर पर जेल में बन्द कर दिया गया। तत्पश्चात् नौ मास तक अपने क्षेत्र में नज़रबन्द किए गए। सन् 1933 ई. में अनिश्चित् काल के लिए देश से निर्वासित कर दिया गया। गाँधी इरविन पैक्ट पर देहली वापस आ गए। सन् 1942 ई. में पुनः गिरफ़्तार कर के दो मास तक नज़रबन्द रखा उसके बाद इन शर्तों के साथ छोड़ा गया कि दिन में तीन बार थाने में उपस्थिति देंगे, क्षेत्र 4 व 5 से बाहर नहीं जायेंगे तथा किसी जुलूस के सभा में सम्मिलित भी नहीं होंगे। परन्तु लाला हनुवन्त जी इस प्रकार की को शर्तें मन्ज़ूर नहीं थी। अतः उन्होंने इन शर्तों को मानने से इन्कार कर दिया। ऐसा करने पर उसी समय उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। क़ानून का उल्लंघन करने के विरुद्ध उन पर अभियोग चलाया गया। इसी बीच वह रोग ग्रस्त हो गए। गम्भीर स्थिति को देखते हुए उनको ज़मानत पर छोड़ा गया। जब उनकी हालत नहीं सुधरी तो सरकार ने अभियोग वापस ले लिया।[22]

सन् 1943 ई. में जबकि काँग्रेस कमेटी अवैधानिक थी। हनुवन्त जी ने चार सौ राजनीतिक कार्यकर्ताओं की सभा कर के काँग्रेस संगठन समिति

स्थापित की, जिसमें आम सहमति से उनको समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

लाला हनुवन्त जी के सुभाषचन्द्र बोस से भी बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। काँग्रेस के उच्च कमान भ्रष्टाचार के विषय में सुभाषचन्द्र बोस के विचारों से सहमत थे। काँग्रेस के उच्च कमान निर्णय के विरुद्ध 'अखिल भारतीय दिवस' मनाया गया तो उसमें हनुवन्त जी ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया था। उस दिन देहली के गाँधी ग्राउण्ड में हनुवन्त जी की अध्यक्षत में सभा का आयोजन हुआ था।[23]

1947 ई. में जब भारत स्वतन्त्र हो गया तो हनुवन्त जी अपनी हवेली के अन्दर ही रहते थे। केवल वर्ष में एक बार स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण कर के लाल क़िले तक जाते थे। झण्डा रोहण के बाद जवाहरलाल नेहरू का भाषण सुनते और फिर हवेली में चले जाते थे। अपना अधिकाँश समय पुस्तकों के अध्ययन में व्यतीत करते थे। एक बार किसी के पूछने पर लाला जी ने बताया था कि वह स्वतन्त्रता दिवस पर ही क्यों कोठी से बाहर आते है? तब उन्होंने उत्तर दिया कि मैं यह देखने जाता हूँ कि जिन्होंने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में क्रान्तिकारियों को धोखा दिया वह लाल क़िले की प्राचीर से लच्छेदार भाषण देते हुए कैसे लगते हैं?[24]

निष्कर्ष:

इन दोनों राष्ट्रवादी क्रान्तिकारियों के द्वारा किये गये रचनात्मक कार्य और बलिदान किसी भी प्रकार अन्य आन्दोलनकारियों से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं परन्तु इन दोनों स्वतन्त्रता सेनानियों के विषय में बहुत कम लिखा गया है जो इनके साथ अन्याय है। अतः ऐसे स्वतन्त्रता सेनानियों के योगदान को वर्तमान पीढ़ी के सामने लाना अत्यन्त अवश्यक है।

सन्दर्भ सूचि:

1. सेवक विष्णु देहलवी, 'देहली की ख़ाक-ए-पाक का एक ज़र्रह: मा ॅस्टर अमीर चंद साहब देहलवी' जे एण्ड सन्स प्रेस देहली, (1947) पृ0 15
2. चोपड़ा, प्राणनाथ, ''हूज हू आफ़ इंडियन मारटायर''एखण्ड -1, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1969, पृ0 10
3. तदैव, पृ0 5
4. तदैव, पृ0 8
5. तदैव, पृ0 8-9
6. तदैव, पृ0 9-10
7. तदैव, पृ0 10.11
8. तदैव, पृ0 11
9. तदैव, पृ0 12
10. तदैव, पृ0 13
11. सिंह, अयोध्या, ''भारत का मुक्तिसंग्राम'' ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, 2005, पृ0 223
12. कर, जेम्स कैंपबे ेल, ''पालिटिकल ट्रबल्स इन इंडिया'', 1907.17, एडीशन इंडिया कलकत्ता 1973, पृ0 331-32, उद्धृत, तदैव पृ0 224
13. तदैव, पृ0 14
14. wiki.gyan.blogspot.com
15. जगेश, जगदीश, 'कलम आज उनकी जय बाले', वाराणसी: हिन्दी प्रचारक संस्थान, 1989, पृ0 77
16. साबरी इमदाद, 'सुभाष बाबू के साथी', चूड़ीवालान, देहली, 1946 पृ0
1. 3-4
17. तदैव, पृ0 4-5
18. तदैव, पृ0 6
19. तदैव, पृ0 7

20. तदैव, पृ0 7
21. तदैव, पृ0 7-8
22. तदैव, पृ0 8
23. तदैव, पृ0 8
24. क्रांति 2006, 'स्वधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास' प्रथम संस्करण, नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन, 2006, पृ0 241 उद्धृत hi.m.wikipedia.org